



प्रसार शिक्षा निदेशालय

राजस्थान पशुचिकित्सा और पशु विज्ञान विश्वविद्यालय  
बीकानेर

# पशु पालन नए आयाम

वर्ष : 8

अंक : 02

अक्टूबर, 2020

मूल्य : ₹2.00



। पशुधनं नित्यं सर्वलोकोपकारकम् ।

## मार्गदर्शन : कुलपति प्रो. (डॉ.) विष्णु शर्मा

### कुलपति सन्देश

## जैविक पशुपालन है हमारे लिए लाभकारी

प्रिय किसान एवं पशुपालक भाइयों-बहनो । राम-राम सा ।

आधुनिक समय में उपभोक्ता अपने द्वारा प्रयोग में लिए जाने वाले खाद्य पदार्थों की गुणवत्ता तथा खाद्य सुरक्षा के प्रति अत्यधिक जागरूक हो गया है। रसायन मुक्त, पर्यावरण की दृष्टि से सुरक्षित व गुणवत्ता युक्त स्वास्थ्य के लिए लाभप्रद उत्पादों की मांग जैविक पशुपालन से ही संभव है। जैविक उत्पादों के निर्यात के भी पूरे अवसर मिलते हैं तथा जैविक पशु उत्पाद अन्य पशु उत्पादों की तुलना में अधिक मूल्य पर बिकते हैं। जैविक पशुपालन आर्थिक दृष्टि से किसानों के लिए लाभकारी है। जैविक पशुपालन में लाभप्रद बात है कि हमारे यहां इन विधियों का बहुत पारंपरिक ज्ञान और संसाधन भी मौजूद है। हमारे पास विभिन्न हार्मोनों, एलोपैथिक दवाओं के स्थान पर प्रयोग करने के लिए आयुर्वेद व प्राकृतिक संसाधनों का विस्तृत ज्ञान है जो कि स्वास्थ्य व पर्यावरण की दृष्टि से बहुत महत्वपूर्ण है। जैविक पशुधन उत्पादन एक प्रकार का खाद्य तंत्र है जिसमें पशुओं का इलाज, पर्यावरण सुरक्षा, न्यूनतम मात्रा में औषधियों का प्रयोग हानिकारक तत्वों के बिना उत्पादन होता है। बढ़ती आधुनिकता और ग्लोबल वार्मिंग ने जिन नई-नई बीमारियों को जन्म दिया है उसमें रसायनिक खादों एवं उस पर चरने वाले पशुधन के उत्पादों का भी पूर्ण प्रभाव रहता है।

वेटरनरी विश्वविद्यालय ने जैविक पशुधन उत्पादों के प्रति आमजन में जागरूकता लाने के लिए किसानों और पशुपालकों को प्रशिक्षित करने के कार्यों को अपनी प्राथमिकता में शामिल किया है। वेटरनरी विश्वविद्यालय के जैविक पशुधन उत्पाद तकनीक केन्द्र में विशेषज्ञों की सेवाएं सुलभ करवाई है। हमने अपने सभी पशुधन अनुसंधान केन्द्रों पर जैविक पशुधन और फॉर्म उत्पादन को जैविक मोड पर लाने के लिए जैविक पशुपालन मानक एवं प्रमाणीकरण का कार्य शुरू कर दिया है। जैविक पशुपालन के लिए जरूरी है कि जैविक पशु फॉर्म को सामान्य पशुधन फॉर्म से बिल्कुल अलग रखें व अन्य पशुओं को इसमें न आने दें। इसका प्रमाणीकरण अधिकृत जैविक प्रमाणीकृत एजेन्सी से करवाना चाहिए। जमीन की उर्वरकता को बढ़ाने के लिए पूर्णतः जैविक खाद्य जैसे कि वर्मी कम्पोस्ट, जैविक उपघटक पदार्थों तथा फॉर्म में बचे हुए अनुपयोगी पदार्थों का उपयोग करें। पशुओं को पूर्णतः जैविक चारा खिलाएं जो कि प्रमाणित जैविक बीजों का ही होना चाहिए। कीटों व पीड़कों का नियंत्रण जैविक व भौतिक विधियों से करें। पशुओं का प्रबंधन भली प्रकार से करें ताकि वे बीमार न पड़े, बीमार होने पर जहां तक संभव हो आयुर्वेद व होम्योपैथिक दवाओं का उपयोग करें। पशु उत्पादों की प्रोसेसिंग जैविक तरीके से करें तथा इनमें कोई भी संश्लेषित फीड या एडिटिक्स या रासायनिक संरक्षक न मिलाएं। इनकी पैकेजिंग भी जैविक तरीके से करें तथा प्रमाणीकृत एजेन्सी से प्रमाणित करवा कर जैविक पशुधन उत्पाद होने का मार्का लगाकर ही बिकी करें। इससे आपको अधिक लाभ होगा। इस बाबत वेटरनरी विश्वविद्यालय के जैविक पशुधन उत्पाद तकनीक केन्द्र से संपर्क कर मार्गदर्शन लिया जा सकता है।

जयहिन्द ।

( प्रो. {डॉ.} विष्णु शर्मा )



किसी देश की महानता का आंकलन इस बात से किया जा सकता है कि लोग पशुओं से कैसा व्यवहार करते हैं।

—महात्मा गांधी



## विश्वविद्यालय समाचार

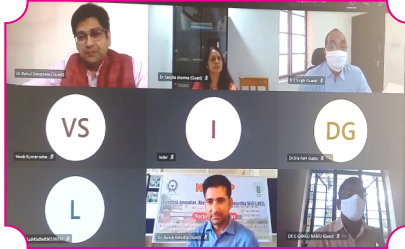
### विश्व रेबीज दिवस पर अन्तर्राष्ट्रीय वेबिनार

विश्व रेबीज दिवस पर वेटरनरी विश्वविद्यालय में 28 सितम्बर को अन्तर्राष्ट्रीय वेबिनार का आयोजन किया गया। स्नातकोत्तर पशुचिकित्सा शिक्षा एवं अनुसंधान संस्थान, जयपुर द्वारा "भारत में एकल स्वास्थ्य दृष्टिकोण से उभरती जूनोसिस और रेबीज की रोकथाम और नियंत्रण" विषय पर आयोजित वेबिनार में देश-विदेश के विशेषज्ञ व वक्ताओं ने शिरकत की। वेबिनार के लिए 2 हजार प्रतिभागियों ने अपने पंजीकरण करवाए। इंग्लैंड अमेरिका, श्रीलंका, बांग्लादेश, नेपाल सहित दस देशों में इसके प्रसारण को देखा और सुना गया। पूर्व सांसद एवं महाभारत टी.वी. सीरियल के अभिनेता एवं पशुचिकित्सक डॉ. नीतिश भारद्वाज मुख्य अतिथि रूप में शामिल हुए। वेटरनरी विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. विष्णु शर्मा ने वेबिनार को सम्बोधित करते हुए कहा कि नई जूनोटिक बीमारियों और रेबीज जैसे रोगों की प्रभावी रोकथाम के लिए पशु चिकित्सा, मेडिकल साइंस और पर्यावरण विज्ञान को मिलकर प्रयास करने की जरूरत है। वैश्वीकरण और जलवायु परिवर्तन के कारण जूनोटिक बीमारियों का प्रभाव सभी क्षेत्रों में देखने को मिल रहा है। मानव व पशु कल्याण के हित में ऐसी बीमारियों के नियंत्रण के लिए एकल स्वास्थ्य दृष्टिकोण से कार्य करने की जरूरत है। वेबिनार में दक्षिण एशिया आई.एल.आर.आई. के क्षेत्रीय प्रतिनिधि डॉ. एच. रहमान, राजुवास के पूर्व कुलपति एवं राज्यपाल सलाहकार परिषद् के सदस्य डॉ. ए.के. गहलोत, विश्व स्वास्थ्य संगठन की प्रतिनिधि डॉ. बर्नाडेट अबेला (जैनेवा), इंग्लैंड की वर्ल्ड वाइड वेटरनरी सर्विस की मिशन रेबीज के एन्डो गिब्सन, भारत सरकार के एन.सी.डी.सी. जूनोटिक डिजीज डिवीजन की प्रमुख डॉ. सिम्मी तिवाड़ी, डॉ. एस.रामानाथन (यू.एस.) तथा नेशनल रेबीज कंट्रोल बोर्ड नई-दिल्ली के सहायक निदेशक डॉ. तुषार नेले ने रेबीज वन हेल्थ एप्रोच पर विचार व्यक्त किए। अधिष्ठाता प्रो. संजीता शर्मा ने वेबिनार के प्रारंभ में विषय प्रवर्तन किया। डॉ. डी.एस. मीना ने वेबिनार का संयोजन किया।



### पशुचिकित्सा के क्षेत्र में केरियर पर राष्ट्रीय वेबिनार

पी.जी.आई.वी.ई.आर. जयपुर द्वारा 26 सितम्बर को पशुधन नवाचार, ज्ञान और उद्यमिता कौशल केन्द्र के तत्वावधान में "पशुचिकित्सा और पशुपालन क्षेत्र में केरियर को कैसे विकसित करें" विषय पर



राष्ट्रीय वेबिनार का आयोजन किया गया। वेबिनार के मुख्य वक्ता डॉ. राहुल श्रीवास्तव, वाइस प्रेसिडेंट, हेसचर बायो साइंस लिमिटेड ने पशुचिकित्सा के विभिन्न आयामों का विस्तार पूर्वक उल्लेख करते हुए विद्यार्थियों को हर क्षेत्र में सफलता के रहस्यों से अवगत कराया। अधिष्ठाता एवं संकाय अध्यक्ष प्रो. आर.के. सिंह एवं संस्थान की अधिष्ठाता प्रो. संजीता शर्मा ने भी विचार व्यक्त किये। वेबिनार का संचालन डॉ. अशोक बैदा ने किया।

### वेटरनरी विश्वविद्यालय में उच्च तकनीकी कोटि का वर्चुअल क्लास रूम स्थापित

राष्ट्रीय कृषि उच्च शिक्षा परियोजना के तहत देश के ख्यातनाम वेटरनरी विश्वविद्यालय, बीकानेर में वर्चुअल क्लास रूम स्थापित किया गया है। वेटरनरी विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. विष्णु शर्मा ने बताया कि भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद् द्वारा इण्डियन एग्रीकल्चर स्टेटिक्स रिसर्च इंस्टीट्यूट की केन्द्रीकृत परियोजना के अन्तर्गत देश के श्रेष्ठ चुनिंदा विश्वविद्यालय के रूप में वेटरनरी विश्वविद्यालय, बीकानेर का चयन किया गया है। इस क्लास रूम से प्रतिदिन उच्च कोटि के व्याख्यान की रिकॉर्डिंग और प्रसारण की सुविधा मिलेगी। इसके द्वारा रिकॉर्ड किये गए लेक्चर से देश के समस्त विद्यार्थी लाभान्वित हो सकेंगे। अत्याधुनिक वर्चुअल क्लासरूम देश के सिर्फ 18 विश्वविद्यालयों में ही स्थापित किये गए हैं।

### श्वानों और बिल्लियों की पीडियाट्रिक अवस्था में स्वास्थ्य प्रबंधन पर राष्ट्रीय वेबिनार

वेटरनरी विश्वविद्यालय के स्नातकोत्तर पशुचिकित्सा शिक्षा एवं अनुसंधान संस्थान, जयपुर एवं एलेम्बिक फार्मास्यूटिकल्स के संयुक्त तत्वावधान में 15 सितम्बर को "श्वानों और बिल्लियों की पीडियाट्रिक अवस्था में चिकित्सकीय स्वास्थ्य प्रबंधन और व्यवहारिक दृष्टिकोण के पहलू" विषय पर राष्ट्रीय वेबिनार का आयोजन किया गया। वेटरनरी विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. विष्णु शर्मा ने कहा कि श्वान बिल्ली जैसे पालतु पशुओं के पालन के प्रति समाज में रुझान तेजी से बढ़ रहा है अतः इनके स्वास्थ्य प्रबंधन और उपचार तकनीकों में विशेषज्ञता के साथ ही सामुदायिक प्रयासों की भी जरूरत है। वेबिनार के मुख्य अतिथि केरल वेटरनरी एण्ड एनीमल साइंस यूनिवर्सिटी के कुलपति प्रो. एम.आर. सशीन्द्रनाथ, राजुवास के पूर्व कुलपति एवं राज्यपाल सलाहकार परिषद् के सदस्य डॉ. ए.के. गहलोत, भारतीय पशुचिकित्सा अनुसंधान संस्थान के पूर्व प्रमुख वैज्ञानिक डॉ. जे.पी. वार्षेय वेबिनार के मुख्य वक्ता रहें। स्नातकोत्तर पशुचिकित्सा शिक्षा एवं अनुसंधान संस्थान, जयपुर की अधिष्ठाता प्रो. संजीता शर्मा ने वेबिनार के प्रारंभ में सभी का स्वागत किया। डॉ. धर्मसिंह मीणा ने वेबिनार का संचालन किया।





## पशुपालक प्रशिक्षण समाचार

### वी.यू.टी.आर.सी., रतनगढ़ ( चूरू )

पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र, चूरू द्वारा 4, 9, 16, 23 एवं 28 सितम्बर को आयोजित ऑनलाइन पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों में 114 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

### वी.यू.टी.आर.सी., सूरतगढ़ ( श्रीगंगानगर )

पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र, सूरतगढ़ द्वारा 4, 7, 11, 16, 21 एवं 23 सितम्बर को ऑनलाइन पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 145 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

### वी.यू.टी.आर.सी., सिरोही

पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र, सिरोही द्वारा 8, 15, 19 एवं 23 सितम्बर को आयोजित ऑनलाइन पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों में 67 पशुपालक एवं कृषक लाभान्वित हुए।

### वी.यू.टी.आर.सी., बाकलिया ( नागौर )

पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र, बाकलिया – लाड़नू द्वारा 5, 8, 10, 15, 19, एवं 28 सितम्बर को ऑनलाइन पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 108 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

### वी.यू.टी.आर.सी., कुम्हेर ( भरतपुर )

पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र, कुम्हेर (भरतपुर) द्वारा 4, 9, 14, 19 एवं 25 सितम्बर को ऑनलाइन पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 92 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

### वी.यू.टी.आर.सी., टोक

पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र, टोक द्वारा 10, 16, 19, 22 एवं 25 सितम्बर को आयोजित ऑनलाइन पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों में 162 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

### वी.यू.टी.आर.सी., धौलपुर

पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र, धौलपुर द्वारा 5, 8, 11, 15, 19, 23 एवं 29 सितम्बर को ऑनलाइन पशुपालक प्रशिक्षण शिविर का आयोजन किया गया। इस शिविर में 142 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

### वी.यू.टी.आर.सी., लूनकरणसर ( बीकानेर )

पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र, लूनकरणसर (बीकानेर) द्वारा 8, 11, 15, 17, 21, 23 एवं 26 सितम्बर को ऑनलाइन पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 160 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

### वी.यू.टी.आर.सी., कोटा

पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र, कोटा द्वारा 5, 8, 11, 15, 18, 22 एवं 25 सितम्बर को ऑनलाइन पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 212 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

### वी.यू.टी.आर.सी., बोजुन्दा ( चित्तौड़गढ़ )

पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र, बोजुन्दा (चित्तौड़गढ़) द्वारा 4, 8, 11, 15, 19, 22 एवं 25 सितम्बर को ऑनलाइन पशुपालक प्रशिक्षण शिविर का आयोजन किया गया। इस शिविर में 121 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

### वी.यू.टी.आर.सी., अजमेर

पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र, अजमेर द्वारा 3, 7, 11, 17, 21 एवं 24 सितम्बर को ऑनलाइन पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 124 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

### वी.यू.टी.आर.सी., झुंझुनूं

पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र, झुंझुनूं द्वारा 7, 14, 21 एवं 28 सितम्बर को ऑनलाइन पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 66 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

### वी.यू.टी.आर.सी., डूंगरपुर

पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र, डूंगरपुर द्वारा 4, 8, 11, 17, 22, सितम्बर को ऑनलाइन पशुपालक प्रशिक्षण शिविर का आयोजन किया गया। इस शिविर में 102 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

### वी.यू.टी.आर.सी., जोधपुर

पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र, जोधपुर द्वारा 7, 10, 16, 19, 24 एवं 28 सितम्बर को ऑनलाइन पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 110 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

### कृषि विज्ञान केन्द्र, नोहर ( हनुमानगढ़ )

कृषि विज्ञान केन्द्र, नोहर जिला हनुमानगढ़ द्वारा 4, 5, 14-15, 16, 19, 22-25 सितम्बर को एक दिवसीय एवं दो दिवसीय प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 172 किसानों ने भाग लिया।



## पशुओं में हिड़काव (रेबीज) रोग

रेबीज एक प्रकार का वायरस से फैलने वाला अत्यन्त घातक व लाइलाज रोग है। पशुओं से पशुओं में तथा पशुओं से मनुष्यों में फैलने के कारण इसे जुनोटिक रोग भी कहा जाता है। रेबीज लाइलाज रोग तो है, परन्तु उचित समय पर टीकाकरण से इस रोग को रोका जा सकता है। रेबीज रोग 150 से ज्यादा देशों में पाया जाता है। मनुष्य में होने वाले रेबीज रोग का मुख्य कारक श्वान है। कुत्ते के काटने से हर वर्ष हजारों की संख्या में मनुष्यों तथा पशुओं की मृत्यु हो जाती है। विश्व स्वास्थ्य संगठन ने इस वर्ष से सब देशों के साथ मिलकर एक अभियान की शुरुआत की है, जिसके तहत वर्ष 2030 तक श्वानों से मनुष्यों में होने वाली मृत्यु दर को शून्य करने का लक्ष्य रखा गया है। रेबीज एक प्रकार का रेहब्बो वायरस है जो कि शीघ्र नष्ट होने वाला विषाणु है। इसका संक्रमण काल निश्चित नहीं है अतः कुत्ते के द्वारा काटने के उसी दिन टीकाकरण करवाना आवश्यक है। इस वायरस की अत्याधिक मात्रा श्वान की लार में होती है। पशु के काटने पर यह वायरस मनुष्य में पहुँच जाता है। यह वायरस तन्त्रिका तंत्र पर प्रभाव डालता है। इसलिए इस रोग को हिड़किया, हिड़काव अथवा पागलपन कहते हैं।

**लक्षण :** कुत्ते के काटने के प्रथम दिन से लेकर कई वर्षों तक भी मनुष्यों एवं पशुओं में लक्षण प्रतीत हो सकते हैं। इस रोग में दो प्रकार के लक्षण प्रकट होते हैं:-

**डम्ब अथवा शान्त स्वरूप :** पशु एक कोने में शान्त होकर डरा व सहमा सा बैठा रहता है। पशु अलग थलग, अंधेरे स्थान पर रहना पसन्द करता है। पशु के मुँह से लार गिरने लगती है। पशु खाना पीना बंद कर देता है। पशु पानी से दूर भागने लगता है जिसे "हाइड्रो फोबिया" कहते हैं। पशु को खाना निगलने में भी परेशानी होती है।

**फ्यूरियस अथवा उग्र स्वरूप :** इस अवस्था में पशु उग्र रूप धारण कर लेता है तथा हिंसक होने लगता है। पशु मारने को दौड़ता है व अनियंत्रित होने लगता है। पशु बार बार पेशाब करता है, बार-बार बैठता है। पशु के मुँह से लार लगातार गिरने लगती है। गाय तो लगातार रम्भाने लगती है तथा खाना-पीना छोड़ने व अत्याधिक तकलीफ के व हृदय गति रूकने के कारण पशु की मृत्यु भी हो जाती है।

**उपचार :** रेबीज का कोई इलाज नहीं है, यह एक लाइलाज रोग है, अतः बचाव ही इसका उपाय है। जैसे ही कुत्ता किसी अन्य पशु को काटे, तुरन्त पशुचिकित्सक के पास अपने पशु को ले जाएं तथा मनुष्य भी नजदीक के चिकित्सालय में जाकर टीकाकरण का पूरा कोर्स लें। घाव वाले स्थान को पानी व साबुन अथवा आयोडीन से अच्छी तरह धोकर साफ करें व प्राथमिक चिकित्सा करावें। अपने श्वान को प्रतिवर्ष एन्टी रेबीज के टीके लगवायें। पशु में पागलपन के लक्षण प्रकट होने पर उस अलग स्थान पर बांध दें। सभी पशुपालक अपने पशु को बाड़े में ही रखें तथा इधर-उधर आवारा घूमने न दें। पागल पशु से दूर रहे व पशु की मृत्यु होने पर उसका सभी सामान जला कर नष्ट कर दें। किसी भी कुत्ते के काटने पर तुरन्त चिकित्सक से सम्पर्क करें व सलाह पर उचित टीकाकरण करावें। टीकाकरण द्वारा ही इस रोग से बचा जा सकता है। अपने आसपास के लोगों को भी रेबीज जागरूकता के बारे में बताएं तथा टीकाकरण की सलाह देवें।

इन उपायों को अपनाकर तथा टीकाकरण एवं जागरूकता अभियान चलाने पर निश्चय ही हम विश्व स्वास्थ्य संगठन के 2030 तक श्वान से होने वाली रेबीज उन्मूलन अभियान में सहायता कर सकते हैं।

डॉ. दीपिका धूड़िया एवं डॉ. रजनी जोशी  
वैटरनरी कॉलेज, बीकानेर

## राजस्थान की नई गौ-नस्ल 'नारी' राष्ट्रीय पशु आनुवंशिक संसाधन ब्यूरो की पंजीकृत श्रेणी में हुई शामिल

राष्ट्रीय पशु आनुवंशिक संसाधन ब्यूरो (भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद), करनाल ने राजस्थान और गुजरात की गौवंश की नई नस्ल "नारी" को पंजीकृत किया है। राष्ट्रीय पशु आनुवंशिक संसाधन ब्यूरो, देशभर में पशुधन और मुर्गीयों के नए पहचाने गए जर्मप्लाज्म



के पंजीकरण के लिए नोडल एजेंसी है। पूर्व में राजस्थान की कुल सात नस्लें-राठी, थारपारकर, साहीवाल, कांकरेज, नागौरी, हरियाणा और मेवाती पंजीकृत थी। राजस्थान में देश का विख्यात देशी गौवंश बहुतायत से पाया जाता है जिनमें गिर, राठी, थारपारकर, साहीवाल, कांकरेज और मालवी गौवंश यहाँ की हेरिटेज धरोहर हैं। देशी गौ-नस्लें यहाँ के वातावरण के लिए अनुकूलित होती हैं व इनकी रोग प्रतिरोधक क्षमता अधिक होती है। देशी गौवंश का दूध अत्यंत पौष्टिक व रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाने वाला होता है जिसके कारण आमजन में गौवंश के दूध और दूध उत्पाद की मांग लगातार बढ़ रही है। देशी गाय के ए2 प्रकार के दूध का दाम ए1 दूध से बहुत अधिक है क्योंकि इसमें पायी जाने वाली विशेष प्रोटीन हृदय की बीमारी व मधुमेह से लड़ने में कारगर पायी गयी है जिस कारण इसकी वैश्विक बाजार में अत्यधिक मांग है और ए2 प्रकार का दूध देने वाला सर्वाधिक गौवंश भारत में ही है। राष्ट्रीय पशु आनुवंशिक संसाधन ब्यूरो की नस्ल पंजीकरण समिति ने पशुधन और मुर्गीयों की तेरह नई नस्लों के पंजीकरण को हाल ही में मंजूरी दी है जिसमें राजस्थान की गौनस्ल "नारी" भी शामिल है जिसके पंजीकरण के साथ ही अब राजस्थान की कुल पंजीकृत नस्लें आठ हो गयी हैं। गौवंश की नयी पंजीकृत नस्ल "नारी" मुख्यतः राजस्थान के सिरोही और पाली जिलों तथा गुजरात के साबरकांठा और बनासकांठा जिलों में पायी जाती है। प्रारम्भ में नारी नस्ल नीलगाय की तरह जंगली थी जिसको सर्वप्रथम पालतू बनाने का कार्य भीलों द्वारा तथा उसके पश्चात् गुर्जर और रेबारी जाति के लोगों द्वारा किया गया। यह आकार में मध्यम, पलायन क्षमता में उत्कृष्ट के साथ ही सभी प्रकार के मौसम के दौरान खुली आवास व्यवस्था में मात्र चराई पर निर्भर रह सकती है। अधिकतर गायों में त्वचा का रंग सफेद तथा सांडों में सफेद, भूरा सफेद और कभी-कभी काला होता है। सींग सर्पिल, आगे ओर बाहर की ओर घुमाव लिए हुए होते हैं। माथा चौड़ा और थोड़ा अवतल होता है। ये दोहरे उद्देश्य वाले मवेशी हैं जिनका उपयोग दूध और भारवहन के उद्देश्य के लिए किया जाता है। दैनिक दूध की पैदावार 5 से 9 किलोग्राम और दूध देने की 250 दिन की अवधि में औसतन लगभग 1119 से 2223 किलोग्राम दुग्ध उत्पादन होता है। मैदानी और पहाड़ी वन क्षेत्रों में भारवहन शक्ति की दृष्टि से यह नस्ल उत्कृष्ट है। राजस्थान और गुजरात में इनकी औसत जनसंख्या लगभग 55,000 है।

डॉ. मंगेश कुमार एवं डॉ. संध्या मोरवाल  
राजुवास, बीकानेर।



## आर्सेनिक विषाक्तता का पशु स्वास्थ्य पर दुष्प्रभाव तथा उपचार

आर्सेनिक विषाक्तता मनुष्यों एवं पशुओं में प्रमुख विषाक्तताओं में से एक है। आर्सेनिक हमारी पृथ्वी पर कार्बनिक एवं अकार्बनिक दोनों प्रकारों में यौगिक एवं अयस्क रूप में पाया जाता है। आर्सेनिक और इसके यौगिक रवेदार (क्रिस्टलाइन), पाउडर और एमोरफस या काँच जैसी अवस्था में पाये जाते हैं। आर्सेनिक का दोहन नहीं किया जाता किन्तु यह ही अन्य धातुओं जैसे तांबा, सीसा, जस्ता आदि के अयस्कों से धातु-शोधन के दौरान प्राप्त होता है। भू-पर्पटी में उपस्थिति की वजह से आर्सेनिक विभिन्न रूप और यौगिकों में सामान्यतः चट्टान, मिट्टी, पानी और वायु में काफी मात्रा में पाया जाता है। आर्सेनिक मानव एवं पशु शरीर के लिये जहरीला असर पैदा करता है, आर्सेनिक-विषाक्तता को चिकित्सकीय भाषा में आर्सेनिकोसिस कहते हैं। आर्सेनिक सर्वाधिक कैंसरकारी ज्ञात तत्वों में से एक है। एक अरब भाग जल में इसके 10 भाग से अधिक विद्यमान हों तो जल विषैला हो जाता है। आर्सेनिक, शरीर में उपलब्ध आवश्यक एंजाइम्स पर नकारात्मक प्रभाव छोड़ता है और जिसकी वजह से शरीर के बहुत से अंग काम करना बंद कर देते हैं, अंत में इसकी वजह से रोगी की मौत हो जाती है। आर्सेनिकोसिस की चार क्लिनिकल अवस्थाएँ हैं— मेलोनेसिस (पिंगमेंट्स का ज्यादा हो जाना), हथेली और तलवों का किरेटोसिस (त्वचा में किरेटिन की मात्रा बढ़ जाना), विसरित एवं पृष्ठीय किरेटोसिस (त्वचा कैंसर से पहले की अवस्था) फिर त्वचा का कैंसर। वातावरण में उपलब्ध आर्सेनिक के प्रकट स्रोत में प्राकृतिक और मानवजनित स्रोत निम्न हैं—

**प्राकृतिक**— आर्सेनिकयुक्त सिल्ट/गाद/ज्वालामुखी लावे से भूजल में आर्सेनिक का रिसाव; मिट्टी में आर्सेनिक का रिसना और घुलना।

**मानवजनित**— आर्सेनिकयुक्त कृषि रसायन एवं कीटनाशक (कॉपर एसीटोआर्सेनाइट या पेरिस ग्रीन), खरपतवार नाशक जैसे सोडियम-पोटेशियम आर्सेनाइट तथा आर्सेनेट, दीमकरोधी जैसे रासायनिक तत्व (आर्सेनिक पेंटोक्साइड), औद्योगिक स्रोत, खनिज संशोधन, खनिज संशोधन के अम्ल-अपशिष्ट का निस्तारण, जैव-ईंधन का जलना, आदि। जब खेतों की सिंचाई आर्सेनिकयुक्त पानी से की जा रही हो तो आर्सेनिक का अकार्बनिक स्वरूप पौधों में अवशोषित हो जाता है और इस तरह आर्सेनिक खाद्य चक्र में शामिल हो जाता है।

संदूषित चारा खाने के कारण रोमंथी पशुओं में विषाक्तता अन्य पशुओं की तुलना में अधिक होती है। मात्रा के आधार पर अकार्बनिक त्रिसंयोजक आर्सेनाइट को आर्सेनिक का सबसे जहरीला स्वरूप माना जाता है। आर्सेनिक विषाक्तता कमजोर, रोगी और पानी की कमी वाले पशुओं में अधिक मारक प्रभाव डालती है क्योंकि ऐसे पशुओं में आर्सेनिक को उत्सर्जित करने के क्षमता कमजोर हो जाती है।

आर्सेनिक के घुलनशील यौगिक अवशेष भूजल अथवा सतही जल में घुल जाते हैं और आर्सेनिक हमारे पेयजल में आ जाता है। पीने के पानी में मौजूद आर्सेनिक आंतों द्वारा अवशोषित कर लिया जाता है, वहाँ से रक्तवाहिनियों इन्हें विभिन्न अंगों तक पहुंचाती हैं। आर्सेनिकयुक्त विषाक्तता वाले पशु के बाल, नाखून, खुर, मूत्र और त्वचा की पपड़ियों में आर्सेनिक जमा हो जाता है, जिनकी जाँच करके शरीर में अवशोषित आर्सेनिक की मात्रा का पता लगाया जाता है। सामान्यतः शरीर आर्सेनिक

के बहुत कम मात्रा का आदी होता है, जो वह मूत्र के जरिए बाहर निकाल सकता है। अगर अधिक मात्रा में आर्सेनिक का सेवन होने लगे तो यह शरीर के अंदर ही रह जाता है। आर्सेनिक शरीर पर कई प्रकार के नकारात्मक प्रभाव छोड़ता रहता है। पशुओं में आर्सेनिक विषाक्तता के स्तर के आधार पर अलग-अलग और भ्रमित करने वाले लक्षण उपस्थित होते हैं। विकट/तीव्र विषाक्तता की स्थिति में आंत्रशोथ, पेटदर्द, पानी जैसे दस्त, शरीर में कम्पन, चक्कर आना, पिछले पैरों का लकवा आदि लक्षण प्रकट होते हैं। कम विषाक्तता की स्थिति में पशु को भूख न लगना, लड़खड़ा कर चलना, कमजोरी, दस्त लगना, पेशाब अधिक लगना और फिर पेशाब बंद होना, मेटाबोलिक एसिडोसिस आदि के लक्षण होते हैं। अधिकतर कुएँ आर्सेनिक मुक्त होते हैं, हालांकि कुछ कुओं के पानी में आर्सेनिक की मात्रा पाई गई है। सतही जल अमूमन आर्सेनिक मुक्त होते हैं। बारिश का जल हमेशा आर्सेनिकमुक्त होता है। भारत में पश्चिम बंगाल, बिहार, उत्तर प्रदेश, झारखण्ड, छत्तीसगढ़, असम, नागालैंड, मणिपुर, त्रिपुरा, अरुणाचल प्रदेश आदि राज्यों में आर्सेनिक का प्रभाव पाया गया है। ज्यादा प्रभावित राज्य पश्चिम बंगाल, बिहार, उत्तर प्रदेश और झारखण्ड हैं। राजस्थान में भी पाली जिले के कुछ स्थानों पर पानी में जायज़ स्तर से कहीं अधिक आर्सेनिक की मात्रा पाई गई है। पानी में आर्सेनिक की मात्रा का सुरक्षित मानक स्तर 10 पी.पी.बी. होना चाहिये।

### आर्सेनिक विषाक्तता पर उपचार —

आर्सेनिक विषाक्तता का कोई विशिष्ट विषहर औषध (एंटीडोट) नहीं है तथा धात्विक विषाक्तता में प्रयुक्त चीलेटिंग औषधियों को उपचार में प्रयुक्त किया जाता है जैसे, ब्रिटिश एंटी लेवीसाईट। किन्तु इस प्रकार का उपचार मिलने में भी समस्या ये है कि विषाक्तता का निदान सही से और सही समय से किया जाये जो कि स्वयं में ही दुष्कर कार्य है। कारण ये है कि इन चीलेटिंग औषधियों के स्वयं के दुष्परिणाम भी होते हैं अतएव केवल अनुमान के आधार पर इन्हें प्रयोग में नहीं लाया जाता।

### बचाव के उपाय—

- आर्सेनिक संदूषित क्षेत्रों का चिन्हीकरण कर संदूषण के स्रोतों को समाप्त करने के प्रयास होने चाहिए।
- वर्षा जल संरक्षण के वैज्ञानिक प्रयासों का प्रोत्साहन, प्रसार एवं उपयोग को आर्सेनिक संदूषित क्षेत्रों में बढ़ावा दिया जाना चाहिए।
- पीने के पानी के स्रोतों के नमूने लेकर जल स्रोत में आर्सेनिक की मात्रा का निर्धारण एवं विषाक्त जल स्रोतों का प्रयोग प्रतिबंधित करने हेतु ग्राम पंचायत स्तर पर कार्य सुनिश्चित किया जाना चाहिए।
- संदूषित क्षेत्रों में पश्चिम बंगाल की तर्ज पर पानी के सामुदायिक फिल्टर लगाये जाने चाहिए। ग्रेफीन कार्बन फिल्टर द्वारा एवं आर.ओ. सिस्टम द्वारा जल का शुद्धिकरण करने से जल में आर्सेनिक के विषाक्तता से बचाव संभव है।

डॉ. प्रतिष्ठा शर्मा, डॉ. अशोक गौड़ एवं डॉ. सुनीता पारीक  
वेटरनरी कॉलेज, बीकानेर



## अव्यवस्थित पशु प्रबन्धन एवं पर्यावरणीय प्रभाव

पूर्ण रूप से व्यवस्थित पशुपालन कृषक के खेतों की मृदा गुणवत्ता, जैव विविधता के साथ-साथ कृषक की सामाजिक एवं आर्थिक दशा में सुधार करते हैं। हालांकि, अव्यवस्थित पशुपालन आर्थिक एवं पर्यावरणीय हानि भी पहुँचा सकते हैं। बढ़ती हुई पशुओं की संख्या पर्यावरण को हानि पहुँचाने की क्षमता रखती है। पशुधन के द्वारा सम्भावित पर्यावरणीय हानियाँ तथा उनके निजात के लिये महत्वपूर्ण बिंदु निम्नलिखित प्रकार से हैं—

### चारागाहों की क्षमता से अधिक पशुओं का चराना

चारागाह की क्षमता से अधिक संख्या में पशुओं को चराना तथा निरन्तर अधिक दिनों तक पशुओं द्वारा चरने से मृदा पर नकारात्मक प्रभाव पड़ता है। चारागाह सामान्य से कम जैविक पदार्थों का योगदान मृदा में कर पाते हैं, जिसके फलस्वरूप हवा एवं जल द्वारा मृदा क्षरण होने लगता है तथा धीरे-धीरे मृदा की उर्वरक क्षमता में कमी आने लगती है। वह क्षेत्र जहाँ पशुपालन मुख्य रूप से चारागाहों पर निर्भर करता है, चारागाहों को संचालन व्यवस्थित ढंग से किया जाता है, जैसे कि पशु की संख्या एवं झुण्ड के अनुरूप चारागाह में चराने का क्षेत्र तथा समय सुनिश्चित करना जो चारे एवं सूखे की उपलब्धता को ध्यान में रखकर किया जाता है। इस नीति एवं नियंत्रण का ध्यान न रखना या उल्लंघन करना चारागाहों के क्षरण का मुख्य कारण है। चारागाह क्षेत्र में भूजल स्तर का अत्यधिक नीचे गिरना भी चारागाहों के पतन का एक कारण है। कुओं तथा पातालतोड़ कुओं, बोर वैल्स के द्वारा पानी की निकासी भी चारागाहों पर नकारात्मक असर डाल रही है। परिणामस्वरूप, चारागाहों की दशा में गिरावट उन क्षेत्रों में अधिक देखी गई है, जहाँ से भूजल का दोहन क्षमता से अधिक हो रहा है। मानसून के दौरान पशुओं को चराने से चारागाह की मृदा पशुओं की आवाजाही से सख्त बनती है, जिससे मृदा की पानी अवशोषण (अंतःस्पंदन) करने की क्षमता एवं दर में कमी आती है तथा वर्षा जल बहकर (जल अपवाह) चारागाह क्षेत्र से बाहर निकल जाता है, जो अपने साथ मृदा पोषक तत्वों को भी बहा ले जाता है। फलस्वरूप, चारागाह के स्वास्थ्य पर नकारात्मक असर पड़ता है, अतः मानसून के दौरान जीर्णोद्धार के लिये चारागाह को आवश्यक समय देना चाहिए, जो कि अधिकांशतः नहीं दिया जाता है। विभिन्न प्रकार के पशुधन का संतुलित मिश्रण भी चारागाह के उपयुक्त उपयोग के लिये आवश्यक कारक है। प्रत्येक जाति के मवेशी एवं पशुओं की चरने की आदत तथा पसंदीदा घास एवं झाड़ियाँ अलग-अलग होती हैं। उदाहरणतः बकरी एवं ऊंट झाड़ियों के शिखर की पत्तियों को पसंद करते हैं तथा बड़े चाव से खाते हैं। इसके विपरीत भेड़, गाय, भैंस जैसे पशु जमीनी स्तर पर उगी घास को चरना पसंद करते हैं। इस प्रकार से पशुओं के असंतुलन से चारागाह के स्वास्थ्य पर नकारात्मक प्रभाव पड़ता है। इसलिये टिकाऊ चारागाह प्रबंधन के लिये मवेशियों की जातियों के संतुलन बनाना आवश्यक एवं महत्वपूर्ण कदम है।

### जैवविविधता एवं पारिस्थितिकी ह्रास

अव्यवस्थित पशुधन व्यवसाय, वन्य तथा पालतू जानवरों, वन्य वनस्पति, जलीय एवं आर्द्र भूमि पारिस्थितिकी जैव विविधता को नुकसान पहुँचा सकते हैं।

### वन्य तथा पालतू जीवों को नुकसान

चराई तथा मिश्रित फार्म तंत्र द्वारा पशुधन व्यवसाय वन्य जीवों के प्रति एक महत्वपूर्ण चुनौती है। पशु संख्या में वृद्धि तथा संख्या घनत्व में वृद्धि से

पशुधन उत्पादन बढ़ता है, लेकिन चारागाह भूमि का विस्तार अभ्यारण क्षेत्रों में होने लगता है तथा ऐसे क्षेत्रों (वन अभ्यारण) का परिवर्तन मिश्रित खेती उपयोग के लिए होने लगता है।

### पशुधन प्रबन्धकों द्वारा वन्य जीवों को मारने का खतरा

पशुधन प्रबन्धकों द्वारा जंगली जीवों की हत्या एक अलग खतरा है, जिसके पीछे प्रबन्धकों की यह आशंका रहती है की वन्य जीव उनके पशुओं तथा फसलों को नुकसान पहुँचाते हैं और वे पालतू पशुओं के साथ उनके चारे पर निर्भर करते हैं तथा बीमारियाँ फैलाते हैं। कुछ प्रबन्धक मानव सुरक्षा की दृष्टि से भी उनकी हत्या करते हैं।

### क्षेत्रीय पशुधन का विलुप्तीकरण

व्यवस्थित एवं बृहद् पशुधन उत्पादन से पशुधन प्रजातियों में आनुवंशिक विविधता का ह्रास होने का खतरा रहता है, जो अत्यन्त दुर्भाग्यपूर्ण है। क्षेत्रीय नस्लों में वर्तमान तथा भूतकाल में होने वाले रोगों से बचाव की क्षमता रहती है तथा वह क्षेत्रीय पर्यावरण के प्रति अनुकूल होती है। क्षेत्रीय नस्लों को उच्च उत्पादन वाली आयातित प्रजातियों से लगातार विस्थापन आनुवंशिक विविधता को कम करती है।

### वन तथा वन क्षेत्रों को नुकसान

नवीन चारे एवं उसकी अधिक वृद्धि के लिए जंगल को काटने एवं जलाने से वनस्पति का सार्थक रूप से नुकसान होता है, जिससे क्षेत्रीय पारिस्थितिकी में परिवर्तन होता है तथा वैश्विक तापमान में वृद्धि होती है। वन की आग से निकलने वाले धुएँ से वायु की गुणवत्ता भी खराब होती है।

### पानी की गुणवत्ता एवं उपलब्धता में कमी

पशुधन को जीवित रखने के लिये जल का उपयोग अनिवार्य रहता है, जिससे मौसम अथवा समय के अनुसार अन्य आवश्यकताओं हेतु जल की कमी हो जाती है। ऐसा शुष्क तथा अर्द्धशुष्क क्षेत्रों में पाया जाता है, जहाँ जल आपूर्ति हेतु अत्यधिक मात्रा में भूजल का दोहन किया जाता है।

### जलवायु परिवर्तन

लगभग 17 प्रतिशत वैश्विक मीथेन गैस, जो कि जलवायु परिवर्तन के लिये महत्वपूर्ण घटक है, का उत्पादन पशुओं की पाचन क्रिया से होता है। 20 वर्ष के समय संदर्भ में मीथेन गैस, कार्बन-डाई-आक्साइड गैस की अपेक्षा 5-6 गुणा अधिक वैश्विक तापमान में वृद्धि के लिये जिम्मेवार होगी। इसके अलावा जंगलों को काटने से कार्बन अधिग्रहण की क्षमता भी कम होती जा रही है।

अतः क्षेत्र विशेष के प्राकृतिक संसाधनों जैसे कि वनस्पति, जल की उपलब्धता, जलवायु इत्यादि की दृष्टि से उपयुक्त पशु प्रजातियों का चयन, जो वहाँ की जलवायु के अनुकूल हो, विभिन्न प्रकार के मवेशियों का संतुलन मिश्रण, चारागाह की क्षमता के अनुसार मवेशियों की संख्या इत्यादि का सही निर्णय लेने की आवश्यकता है। इसके अतिरिक्त क्षेत्रीय घास, झाड़ियाँ एवं अन्य प्राकृतिक संसाधनों को विशेष महत्व देने की भी आवश्यकता है।

प्रो (डॉ.) बसंत बैस, डॉ. लोकेश टॉक, डॉ. जोरावर सिंह  
वेटेनरी कॉलेज, बीकानेर



## सर्वाधिक सम्भावित पशु रोग पूर्वानुमान-अक्टूबर, 2020

पशु रोग	पशु/पक्षी प्रकार	क्षेत्र
मुँह-खुरपका रोग (Foot & Mouth Disease)	गाय, भैंस, बकरी, भेड़	भरतपुर, दौसा, श्रीगंगानगर, झुंझुनू, धौलपुर, सवाई-माधोपुर, अलवर, जयपुर, बांसवाड़ा, अजमेर, बीकानेर, चूरु
पी.पी.आर. (PPR)	बकरी, भेड़	हनुमानगढ़, बीकानेर, चूरु, झुंझुनू, सीकर, सवाई-माधोपुर, सिरोही, पाली, जयपुर, श्रीगंगानगर, जोधपुर
चेचक (Pox)	बकरी, भेड़	जयपुर, बीकानेर, जोधपुर, बाड़मेर, जैसलमेर, प्रतापगढ़, बांसवाड़ा, अलवर, नागौर
गलघोंटू (Haemorrhagic septicemia)	भैंस, गाय	जयपुर, सवाई-माधोपुर, दौसा, टोंक, बून्दी, राजसमन्द, पाली, सीकर, उदयपुर, श्रीगंगानगर, अलवर, धौलपुर, झुंझुनू, हनुमानगढ़, भरतपुर
न्यूमोनिक पाश्चुरेलोसिस (Pneumonic Pasteurellosis)	गाय, भैंस,	सीकर, बीकानेर, श्रीगंगानगर, हनुमानगढ़, जयपुर, बांसवाड़ा, भरतपुर
ठप्पा रोग (Black Quarter)	भैंस, गाय	जैसलमेर, जयपुर, बीकानेर, राजसमन्द, चित्तौड़गढ़
फड़किया (Enterotoxaemia)	बकरी, भेड़	सवाई-माधोपुर, बांसवाड़ा, जयपुर, सीकर, बीकानेर, श्रीगंगानगर, हनुमानगढ़, धौलपुर, भीलवाड़ा, अलवर, भरतपुर
Enzootic Abortion in Ewes/ Chlamydial Abortion	भेड़	बीकानेर, नागौर
सर्रा (तिबरसा) (Trypanosomiasis)	ऊंट, भैंस	बांसवाड़ा, धौलपुर, हनुमानगढ़, बून्दी, झालावाड़, पाली
रक्त प्रोटोजोआ थाइलेरिओसिस एवं बबेसियोसिस (Theileriosis and Babesiosis)	भैंस, गाय	बांसवाड़ा, बीकानेर, बून्दी, धौलपुर, हनुमानगढ़, सवाई-माधोपुर, जयपुर, पाली, चूरु, अलवर
अन्तः परजीवी (पर्ण-कृमि, गोल-कृमि, फीता-कृमि)	बकरी, भेड़, ऊंट, भैंस, गाय	झुंझुनू, कोटा, राजसमन्द, बांसवाड़ा, सवाई-माधोपुर, भरतपुर, बून्दी, धौलपुर, हनुमानगढ़, श्रीगंगानगर, सीकर, बीकानेर, उदयपुर, चूरु,
खुजली (Mange)	ऊंट, बकरी	बीकानेर, बाड़मेर, जैसलमेर, पाली, झुंझुनू, जोधपुर

विस्तृत जानकारी के लिए सम्पर्क करें - प्रो. आर.के. सिंह, अधिष्ठाता, वेटरनरी कॉलेज, बीकानेर, प्रो. सुनील मेहरचन्दानी, प्रभारी अधिकारी, एपेक्स सेन्टर एवं प्रो. अन्जु चाहर, विभागाध्यक्ष, जनपादकीय रोग विज्ञान एवं निवारक पशु औषध विज्ञान विभाग, वेटरनरी कॉलेज, बीकानेर।

फोन- 0151-2543419, 2544243, 2201183 टोल फ्री नम्बर 18001806224

### सफलता की कहानी

### रेतीले धोरों में प्रताप सिंह ने बकरी पालन को बनाया आय का साधन

श्रीगंगानगर जिले के सूरतगढ़ तहसील के गांव टुकराना के प्रताप सिंह नरुका ने आज से 5 साल पहले रेगिस्तान इलाके में बकरी पालन को अपनी आय का साधन बनाया। प्रताप सिंह का कहना है कि बकरी पालन प्राचीन काल से हमारे पूर्वज करते आ रहे हैं, लेकिन उससे कभी ज्यादा आमदनी नहीं होती थी। प्रतापसिंह पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र, सूरतगढ़ के संपर्क में आए तथा यहां से उन्होंने पशुपालन से सम्बन्धित प्रशिक्षण प्राप्त कर वैज्ञानिक विधि से बकरी पालन शुरू किया। शुरुआत में यह बीटल नस्ल की 15 बकरी लेकर आए उसके बाद सिरोही नस्ल की 20 बकरी ले आए। सिरोही तथा बीटल नस्ल की बकरियों को बेचने के बाद बरबरी नस्ल की 18 बकरी तथा दो बकरें से काम शुरू किया जो बढ़कर अब उनके पास 50 बकरियां हो गई है। प्रतापसिंह



बताते हैं कि वह पहले खेती करते थे लेकिन खेती से कुछ खास आमदनी नहीं होती थी। खेती से केवल परिवार का गुजारा ही हो पाता था फिर उन्होंने खेती के साथ साथ बकरी पालन शुरू किया। बरबरी नस्ल के 4 से 5 माह का बच्चा लगभग तीन से चार हजार रु. में बिक जाता है तथा इनको बकरी पालन से सालाना 2 से 2.50 लाख रु. की आमदनी हो जाती है। प्रताप सिंह अपने इस व्यवसाय से बहुत खुश है तथा वे अपने इस कार्य के लिए पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र, सूरतगढ़ के वैज्ञानिकों के निरंतर संपर्क में रहकर अपने इस व्यवसाय को निरंतर आगे बढ़ा रहे हैं। **सम्पर्क-प्रतापसिंह नरुका, गांव टुकराना**



## उत्तम सांड से ही उत्पादक संतति सम्भव



प्रिय किसान, पशुपालक भाईयों और बहनो ।

गांवों में उत्तम सांड के द्वारा प्रजनन करवाने का प्रचलन अधिक है । अधिकांश पशुपालक ग्राम पंचायत में उपलब्ध अच्छी नस्ल के सांड से प्रजनन करवाते हैं । अच्छे सांड का वरण प्रजनन की आधारशिला है । प्रजनन के दृष्टिकोण से वरण का अर्थ अगली पीढ़ी के लिए उत्तम माता-पिता का चुनाव होता है । केवल वरण अथवा प्रजनन पद्धति से ही पशुओं का सुधार नहीं हो सकता । इन दोनों के तर्कसंगत सम्मिलित उपयोग द्वारा ही पशुधन का उत्थान संभव है । गौधन का विकास उत्तम सांडों के द्वारा ही संभव है । शुद्ध वंश का चयनित सांड अपने जीवन काल में साधारण गायों से भी हजारों उन्नतशील संतति उत्पन्न कर सकते हैं । पशु समूह पर सांड का

सर्वाधिक प्रभाव होता है । इसलिए कहा जाता है कि सांड आधा पशु समूह होता है क्योंकि सांड द्वारा उत्पन्न होने वाले प्रत्येक संतति में आधी आनुवांशिकता का योगदान दिया जाता है । एक वर्ष में वह 30 से 50 या कभी-कभी इससे भी अधिक मादाओं को गर्भित करता है । कृत्रिम गर्भाधान की स्थिति में तो हजारों बच्चों का जन्म निर्धारित करता है । हम कह सकते हैं कि पशु समूह में दुग्ध उत्पादन आदि इच्छित गुणों के विकास के अवसर सांड के माध्यम से प्राप्त होते हैं । अतः सांड का वरण अत्यंत सावधानी से करना चाहिए । प्रजनन सांड का वरण करते समय निरोगी और अच्छी प्रजनन क्षमता का आंकलन पहले कर लेना चाहिए । उसमें क्षयरोग, विब्रियोसिस तथा ट्राइकोमोनियोसिस आदि तथा शारीरिक विकलांगता नहीं होनी चाहिए । सांड अपनी नस्ल के अनुसार शुद्ध होना चाहिए और उसका बाह्य आकार सुन्दर, सुडौल एवं आकर्षक हो, अण्डकोष फूले हुए, चूशत मुतान तथा जननांग त्रुटि रहित होने चाहिए । सांड पशु प्रजनक की उद्देश्यों की पूर्ति हेतु अपनी संतति में इच्छित गुणों को भेजने की क्षमता वाला हो । वरण किए जाने वाले सांड का प्रजनन अभिलेख उत्तम होना चाहिए । सांड वरण के लिए उसकी वंशावली का अध्ययन करते समय उसके माता-पिता, चचेरी बहनों तथा दादा-दादी का समुचित ध्यान रखना चाहिए । जहां तक संभव हो पुराने सांड की अपेक्षा युवा सांड को ही चुनना चाहिए । सांड पूरी तरह स्वस्थ, औजपूर्ण तथा पौरुष पूर्ण होना चाहिए । यदि सांड का उपयोग भविष्य में कृत्रिम गर्भाधान के लिए किया जाना है तो उसका वीर्य अधिक मात्रा में तथा अच्छे गुणों वाला होना चाहिए । उसके वीर्य में संरक्षित रहने की योग्यता भी संतोषजनक होनी चाहिए । सांड की कमर सीधी, कंधा ऊंचा, टांगें सुदूर, पूंछ मोटी व लम्बी तथा दोनों सींग समान होने चाहिए । सांड का भली प्रकार चुनाव करके ही हम उत्तम संतति प्राप्त कर सकते हैं ।

-प्रो. (डॉ.) राजेश कुमार धूड़िया, निदेशक प्रसार शिक्षा, राजुवास, बीकानेर ( मो. 9414283388 )

### मुस्कान !



# RAJUVAS

## पशुपालक चौपाल



॥ पशुधनं निर्वयं सर्वलोकोपकारकम् ॥

माह के प्रत्येक द्वितीय एवं चतुर्थ बुधवार को  
समय : दोपहर 12.00 बजे से 1.00 बजे तक

राजुवास के आधिकारिक फेसबुक पेज से सीधा प्रसारण

 LIVE <https://www.facebook.com/RAJUVASOfficialWebPage>



मुख्य संपादक

प्रो. (डॉ.) आर. के. धूड़िया

संपादक

डॉ. दीपिका धूड़िया

डॉ. मनोहर सैन

दिनेश चन्द्र सक्सेना

संकलन सहयोगी

सुरेन्द्र कुमार श्रीमाली

प्रसार शिक्षा निदेशालय

0151-2200505

email : deerajuvas@gmail.com

पत्रिका में प्रकाशित आलेख /  
विचार लेखकों के अपने हैं ।

बुक पोस्ट

भारत सरकार की सेवार्थ

सेवा में



स्वत्वाधिकारी डायरेक्टर एक्सटेंशन एजूकेशन, राजुवास, बीकानेर के लिए प्रकाशक, मुद्रक प्रो. (डॉ.) आर.के. धूड़िया द्वारा डायमंड प्रिन्टर्स एण्ड स्टेशनरी, नयूसर गेट, बीकानेर, राजस्थान से मुद्रित एवं डायरेक्टर एक्सटेंशन एजूकेशन, बिजेय भवन पैलेस, राजुवास, बीकानेर से प्रकाशित । सम्पादक : प्रो. (डॉ.) आर.के. धूड़िया

पशुचिकित्सा व पशु विज्ञान की जानकारी प्राप्त करने  
के लिए राजुवास के टोल फ्री नम्बर पर सम्पर्क करें ।



1800 180 6224